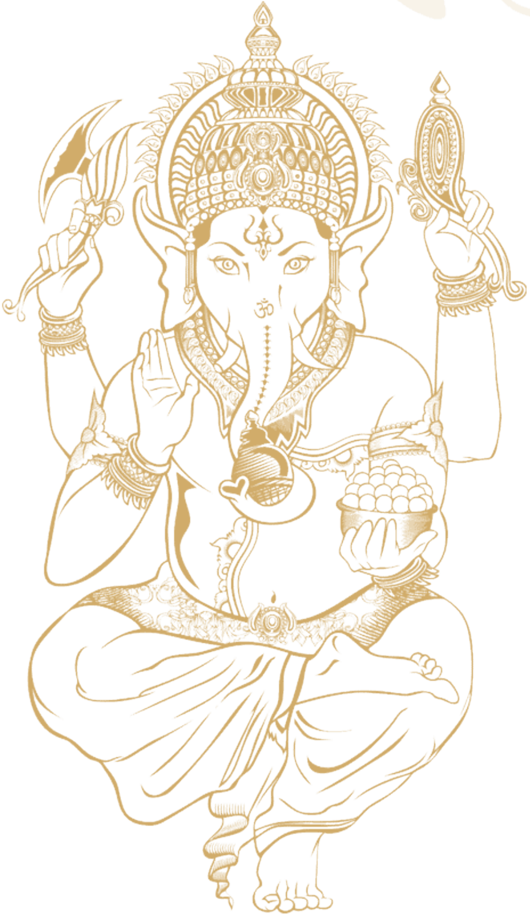

New born

10 Jan 2026

01:34 PM

Lucknow

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121270601

तिथि 10/01/2026 **समय** 13:34:00 **वार** शनिवार **स्थान** Lucknow **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:20
अक्षांश 26:50:00 उत्तर **रेखांश** 80:54:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:06:24 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	20:47:03 घं	गण	देव
वेलान्तर	00:07:26 घं	योनि	महिष
सूर्योदय	06:57:02 घं	नाड़ी	आद्य
सूर्यास्त	17:31:02 घं	वर्ण	वैश्य
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	मानव
शक संवत	1947	वर्ग	श्वान
मास	माघ	युँजा	मध्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	भूमि
तिथि	8	जन्म नामाक्षर	ठ-ठाकुर
नक्षत्र	हस्त	पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-रजत
योग	अतिगण्ड	होरा	चंद्र
करण	बालव	चौघड़िया	लाभ

विंशोत्तरी		योगिनी	
चन्द्र 0वर्ष 9मा 17दि		संकटा 0वर्ष 7मा 19दि	
चन्द्र		संकटा	
10/01/2026		10/01/2026	
28/10/2026		31/08/2026	
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	10/01/2026		00/00/0000
शुक्र	29/04/2026		10/01/2026
सूर्य	28/10/2026	सिद्धा	31/08/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			29:49:21	मेष	कृतिका	1	सूर्य	राहु	---	0:00			
सूर्य			25:51:31	धनु	पूर्वाषाढ़ा	4	शुक्र	बुध	मित्र राशि	1.34	भ्रातृ	पितृ	मित्र
चंद्र			22:16:12	कन्या	हस्त	4	चंद्र	शुक्र	मित्र राशि	1.26	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	25:38:57	धनु	पूर्वाषाढ़ा	4	शुक्र	बुध	मित्र राशि	0.93	मातृ	भ्रातृ	मित्र
बुध		अ	18:56:14	धनु	पूर्वाषाढ़ा	2	शुक्र	राहु	सम राशि	0.86	ज्ञाति	ज्ञाति	मित्र
गुरु	व		25:53:21	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	केतु	शत्रु राशि	1.32	अमात्य	धन	क्षेम
शुक्र		अ	26:43:48	धनु	उत्तराषाढ़ा	1	सूर्य	सूर्य	सम राशि	0.89	आत्मा	कलत्र	अतिमित्र
शनि			02:33:17	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	0.96	कलत्र	आयु	क्षेम
राहु			16:06:20	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु			16:06:20	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	सूर्य	शत्रु राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

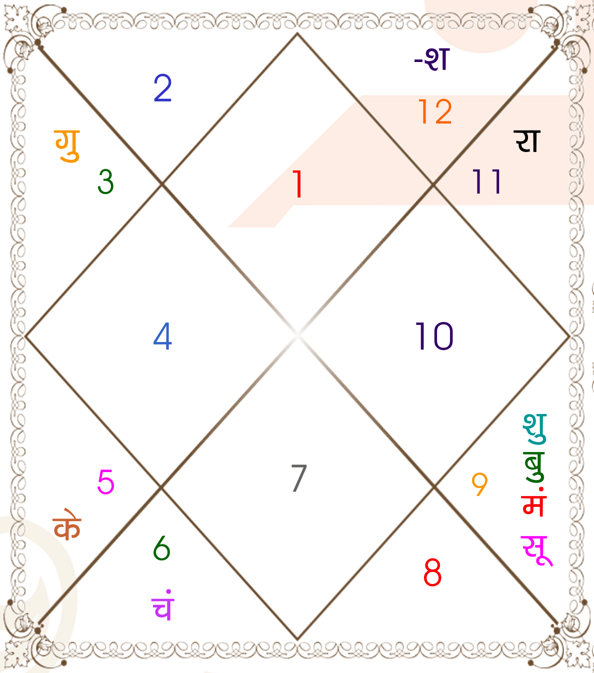

चन्द्र कुंडली

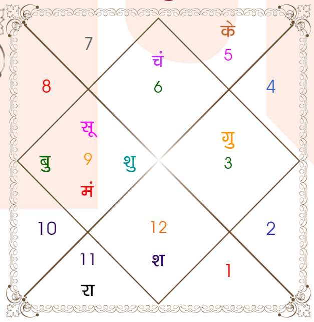

नवमांश कुंडली

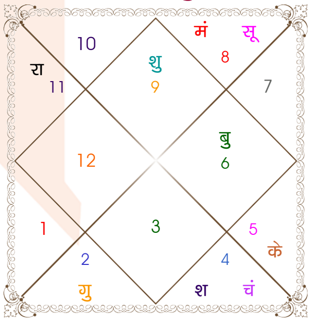

सर्वाष्टकवर्ग

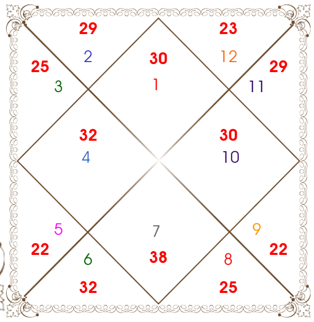

दशमांश कुंडली

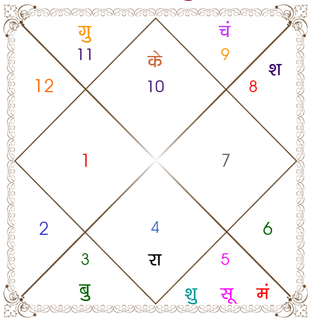

नक्षत्रफल

आपका जन्म हस्त नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि कन्या तथा राशिस्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण वैश्य, गण देव, नाडी आद्य, योनि महिष तथा वर्ग श्वान होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके नाम का शुभारम्भ "ठ" अक्षर से प्रारम्भ होगा यथा- ठाकुर सिंह।

आपके मन में स्वाभाविक दानशीलता की प्रवृति सदैव विद्यमान रहेगी तथा जीवन में आप समयानुसार इस प्रवृति के पालन करने में तत्पर रहेंगे। आप में मनुष्यता के समस्त गुण विराजमान रहेंगे। पुत्रसंतति से भी आप युक्त रहेंगे तथा इनसे आपको पूर्ण प्रसन्नता प्राप्त होगी। आप समाज में खूब लोकप्रियता प्राप्त करेंगे तथा आपका यश दूर दूर तक फैला रहेगा। समाज में आप किसी भी प्रकार के भेदभाव को नहीं मानेंगे तथा सभी वर्गो के प्रति समान रूप से अपना व्यवहार रखेंगे। ब्राहमण तथा देवताओं की आप हमेशा प्रयत्नपूर्वक पूजार्चना करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार की सम्पत्तियों का स्वयं के परिश्रम तथा बुद्धिबल से अर्जन करेंगे तथा हमेशा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

दाता मनस्वी सुतरां यशस्वी भूदेवदेर्वाचनकृत्प्रयत्नतः।
प्रसूति काले यदि यस्य हस्तो हस्तोद्गता तस्य समस्तसम्पत्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक दाता, मनस्वी, अतियशवाला, देवता और ब्राह्मणों का भक्त तथा सर्वप्रकार की सम्पति से सदैव युक्त रहता है।

आप अपने जीवन काल में समस्त सांसारिक एवं भौतिक भोग्य पदार्थो का सुखपूर्वक उपभोग करेंगे तथा दान पुण्यादि धार्मिक कार्यों को करने में भी निरन्तर प्रयत्नशील रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा एक श्रेष्ठ विद्वान के रूप में समाज में सम्मानार्जित करेंगे। साथ ही आपके मन में परोपकार की भावना का भी समावेश रहेगा तथा दूसरो के हित के कार्यो को करने के लिए आप हमेशा तन, मन, धन से तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक धनवान पुरूष भी होंगे तथा विपुल धनैश्वर्य से सुसम्पन्न होंगे।

हस्तर्क्षे यदि कामधर्मनिरतः प्राज्ञोपकर्ता धनी।
जातकपरिजातः

अर्थात हस्त नक्षत्रोत्पन्न जातक सांसारिक भोग्य पदार्थ तथा पारलौकिक शुभ कर्मो को करने वाला तथा धनवान होता है।

आपकी प्रवृति उत्साही होगी तथा उत्साह से आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे एवं आपके समस्त सांसारिक कार्य कलाप उत्साह से ही सम्पन्न होंगे। आप के स्वभाव में लज्जा का भाव रहेगा तथा दुष्ट प्रवृति की ओर भी आप यदा कदा प्रेरित होंगे। एवं इसके साथ ही कभी कभी आप कठोरता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे।

उत्साही धृष्टः पानपोळघृणी तस्करो हस्ते।
बृहज्जातकम्

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक उत्साही, लज्जाहीन, मदिरा का सेवन करने वाला, घृणा न करने वाला एवं तस्कर होता है।

समयानुसार आप मिथ्याभाषण भी करेंगे तथा सज्जनता का प्रदर्शन भी कभी कभी करेंगे।इसके अतिरिक्त संबंधियो तथा बन्धु बाधवों से भी आप युक्त रहेंगे तथा इनसे सहायता आपको प्राप्त होती रहेंगी साथ ही समाज में महिला वर्ग के साथ भी आपके घनिष्ठ एवं मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे।

असत्यवचनो धृष्टः सुरापी बन्धुवर्जितः।
हस्तो जातो नरश्चौरो जायते पारदारिकः।।
मानसागरी

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक झूठ बोलने वाला, निर्लज्ज, मद्यपान करने वाला बन्धुओं द्वारा वर्जित, चोर तथा अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यो में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा।

अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु अल्प मात्रा में रहेंगे तथा वे आपसे पराजित तथा प्रभावित होंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में क्रोध तथा उग्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा। आपका सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं शरीर में पूर्ण रूप से कोमलता विद्यमान रहेगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नताा पूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। द्रव्यों के प्रति भी यदा कदा आपकी आसक्ति रहेगी एवं कभी कभी सामान्य बीमारियों से भी आप पीङित रहेंगे।

कन्या राशि में जन्म होने के कारण आपके हाथ लम्बे होंगे तथा शारीरिक सौन्दर्य भी आकर्षक एवं दर्शनीय रहेंगा। आपका मुखमंडल, आंखे, कान, दान्त तथा अन्य शरीर के अंग भी सुन्दरता से युक्त रहेंगे। स्त्रीवर्ग के प्रति आपके मन में पूर्ण आकर्षण रहेगा तथा आप में श्रेष्ठ विद्वानों के गुण रहेंगे। धार्मिक संस्कारों के आचरण करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर होगी जिसका आप अपने सम्भाषणों में उपयोग करके अन्य सामाजिक जनों को प्रभावित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। सत्य का पालन करना आपका विशिष्ट कर्तव्य होंगा तथा शुद्धता का भी आप विशेष ध्यान रखेंगे। आप सभी कार्यो को शीघ्रता या चंचलता की अपेक्षा धैर्य पूर्वक सम्पन्न करेंगे। समाज में सभी लोगों की भलाई के

लिए किए गये कार्यों में आप पूर्ण रुचि लेंगे। तथा यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करेंगे। संसार के समस्त प्राणियों के प्रति आपके मन में दया की भावना विद्यमान रहेगी। आप का जीवन सुख सौभाग्य से व्यतीत होगा तथा कन्यासंतति अधिक उत्पन्न होगी तथा पुत्र अल्प ही उत्पन्न होंगे।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारुदन्ताक्षिणिकर्णौ।
विद्धानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।
धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।
कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।
सारावली

आप आलस्यमयी एवं लज्जाशील दृष्टि से युक्त होकर गमन करने वाले होंगे तथा बाहुभाग में शिथिलता रहेगी। आपका जीवन सर्वप्रकार से सुख सम्पन्न रहेगा। आपका शरीर दर्शनीय होगा तथा सत्यानुपालन को सर्वदा तत्पर रहेंगे। कलाओं में आपकी विशेष रुचि रहेगी तथा कई कलाओं में आप निपुण भी रहेंगे। साथ ही शास्त्रों के अध्ययन तथा ज्ञानार्जन करने में सफल भी रहेंगे। आप घर से बाहर परदेश में भी निवास करेंगे।

व्रीळामंथरचारुवीक्षणगतिः स्रस्तांसवाहुः सुखी।
श्लक्षणः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।
कन्यायां परदेशगः प्रियवचः कन्याप्रजोळल्पात्मजः।।
बृहज्जातकम्

आप महिला वर्ग को अपनी हास्य एवं कौतूहल पूर्ण क्रियाओं एवं मुद्राओं से प्रसन्न करने में निपुण रहेंगे तथा ये भी आपसे हमेशा प्रसन्नानुभूति करेंगी। आपका व्यवहार सभी लोगों के साथ विनम्रता पूर्ण रहेगा। तथा अच्छे कार्यो को करने की ओर आपकी प्रवृति हमेशा जागृत रहेंगी। आपकी संततियां भी अधिक होगी। लेकिन आप अत्यन्त ही सौभाग्यशाली पुरुष होंगे तथा जीवन में अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में भाग्यबल से ही सफलता प्राप्त करेंगे।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।
विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।
जातकाभरणम्

आपकी बुद्धि निर्मलता से युक्त रहेगी तथा अपने समस्त कार्यों को आप ईमानदारी से पूर्ण करेंगे। आपका आचरण भी उत्तम रहेगा फलतः समाज से पूर्ण मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। लेखन कार्य में आपको सफलता मिल सकेगी। आपका चित्त हमेशा शान्त रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन काल में यदा कदा आंखो की पीड़ा से आपको कष्टानुभूति होती रहेगी। साथ ही गुरुजनों के हित कार्यों की साधना में आप हमेशा तत्पर रहेंगे।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।
कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।

भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।।
गुरुजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आप विलासी प्रकृति से भी युक्त होंगे तथा विलासमय वस्तुओं का संग्रह करके सुखपूर्वक उनका उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। सज्जन पुरूषों से आप विशेष प्रभावित रहेंगे तथा उनका पूर्ण सम्मान करेंगे एवं ये लोग भी आपसे हमेशा खुश रहेंगे। अपनी दानशीलता की प्रवृति का प्रदर्शन आप आजीवन समयानुसार करते रहेंगे। आप समाज के सभी वर्गो में प्रिय एवं सम्मान्नीय होंगे। आप वैदिक धर्म के अनुयायी होंगे तथा नियम पूर्वक इसका अनुपालन करेंगे। संगीत एवं नृत्य आपके लिए मुख्याकर्षण रहेगा तथा इसके प्रति आपकी पूर्ण समर्पण की भावना रहेगी। इसके साथ ही आप विदेश में भी निवास कर सकेंगे। साथ ही आप धार्मिक संस्थाओं में किसी उच्च पद की भी प्राप्ति करने में सफल होंगे।

विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः।
दाताद‍क्षः कविर्बुद्धि वेदमार्ग परायणः।।
सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।
प्रवासशीलः स्त्री दुखी कन्याजातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपका सम्पूर्ण जीवन सुखैश्वर्य एवं वैभव से सुसम्पन्न होकर व्यतीत होगा तथा किसी भी भोग्यपदार्थ के अभाव की आपको अनुभूति नही होगी परन्तु काम भावना के प्रवलता के कारण आप समय समय पर व्याकुलता का आभास करेंगे। आपकी वाणी मधुर होगी तथा कई शास्त्रों के विषय में आपको तत्व ज्ञान रहेगा।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।
जातकपरिजातः

देवगण में जन्म होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही मृदु एवं उत्तम होगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही सरल होगी अतः सरलता पूर्वक अपने विचारो को प्रकट करना तथा उसी प्रकार अन्य के विचारों को ग्रहण करना आपकी मुख्य विशेषता रहेगी। थोड़ी मात्रा में भोजन करना आपको अत्यन्त ही प्रिय लगेगा। दूसरे लोगों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा क्रभी महान विद्वानों द्वारा प्रतिपादित किए गये सद्‌गुणों से सर्वथा सुसम्पन्न रहेंगे। आपके जीवन में धनैश्वर्य की बहुलता रहेगी तथा इसका आप कभी भी अभाव अनुभूति नहीं करेंगे।

आपकी शारीरिक सुन्दरता देखने में अत्यन्ताकर्षक रहेगी तथा दानशीलता का भाव आपके मन में सर्वदा विद्यमान रहेगा। आप अत्यन्त सादगी पसन्द होगे तथा सांसारिक एवं भौतिकता के प्रभाव से हमेशा दूर ही रहेंगे। साथ ही आप एक महान विद्वान के रूप में भी समाज में प्रख्यात रहेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।

जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

महिष योनि में पैदा होने के कारण आप वादविवाद संबंधी क्षेत्रों में हमेशा विजय को प्राप्त करेंगे। साथ ही आप एक महान योद्धा के सुलक्षणों से युक्त रहेंगे तथा जीवन के समस्त कार्यों को साहस एवं वीरता के साथ पूर्ण करेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था तथा विश्वास रहेगा परन्तु आपकी बुद्धि मन्द बुद्धि रहेगी तथा प्रकृति वायु प्रधान होगी।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।
वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् महिष योनि में उत्पन्न जातक युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, कामाग्नि से प्रबल, अधिक संतति वाला, वायु प्रधान प्रवृति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान रहता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो

कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

आपके लिए भाद्रपद मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग, कौलवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा मिथुन राशि का चन्द्रमा अशुभ फल देने वाला होगा। अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य 5,10,15 तिथियों, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग तथा कौलवकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यो को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर एवं मिथुन राशि के चन्द्रमा को भी सभी शुभकार्यो में त्याज्य रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो। मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य शुभकार्य सिद्ध न हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव गणेश जी की उपासना करनी चाहिए। तथा गणेश चतुर्थी एवं बुधवार के नियमित रूप से उपवास करने चाहिए। साथ ही सोना, पन्ना, हरा वस्त्र, मूंग की दाल आदि प्रदार्थो को श्रद्धा पूर्वक किसी को दान करना चाहिए इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में भी कमी होगी। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के 8000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभफलों में वृद्धि होगी।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं शीं बुधाय नमः।